JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों पर बुद्ध एवं मार्क्स के दर्शन का प्रभाव का अध्ययन

ड़ॉ जे.सी उपाध्याय प्राध्यापक (से.नि.) इतिहास
समाज विज्ञान अध्ययनषाला
देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इंदौर

अमित कुमार तिवारी इतिहास विभाग
देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इंदौर

शोध सार

डॉ. भीमराव अम्बडेकर एक प्रबुद्ध दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री एव ंसमाज सुधारक भी थे। मानव जीवन एव ंसमाज के हर आयाम को उन्होनें महसूस किया है। व्यक्ति के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एव ंधार्मिक पहलुओ ंपर उन्होंने समान रूप से विचार किया। उनका चिंतन समाज सुधार एवं राजनीति दोनों की ओर निःस्तृत हुआ। उनके विचार एक नवीन सामाजिक क्रांति का सत्रूपात करते हैं। डॉ. अम्बडेकर बाल्यकाल के कटु अनुभवो ंसे काफी परेशान थे। उनके जीवन का लक्ष्य दलितो ंकी स्थिति में सुधार एवं समानता मूलक समाज की स्थापना करना था। व ेसमझते थे कि स्वतंत्रता समाज की स्थापना के लिए जाति सस्था को जोड़ना होगा। वह जाति सस्था को समानता पर आधारित समाज के विरुद्ध मानते थे। उनका कहना था कि 'वर्ण व्यवस्था केवल श्रम का विभाजन नहीं है, वरन् यह श्रमिको ं का विभाजन है। डॉ. भीमराव अम्बडेकर महात्मा बुद्ध एवं मार्क्स के सिद्धांतो ंस ेप्रभावित हुए वह जो खामियाँ मार्क्स के सिद्धांतों में पायी गयी थी उन्होंने उस पर विचार किया वह एक नये रूप में समाज के सामन ेप्रस्तुत किया।

प्रस्तावना

डॉ. अम्बेडकर एक राजनीतिज्ञ, सामाजिक चिन्तक, आर्थिक चिन्तक, ऐतिहासिक व्यक्तित्व और उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री थे। एक शिक्षाशास्त्री के रूप मे ंउनक ेव्यक्तित्व का मूल्यांकन वर्तमान काल मे ंभी सही रूप मे ंकिया जा सकता है। उनके अवसान के पश्चात् भारतीय समाज के अधिकांश वर्ग आज भी उनक ेव्यक्तित्व का मूल्यांकन अछूतो ंके नेता के रूप मे ंही करते हैं। उनकी गणना भारत एवं विश्व के महापुरुषो ंमें से एक युग पुरुष के रूप में थी। महान राष्ट्रवादी एवं मानवतावादी इतिहास पुरुष होने

के साथ वह मूलतः एक शिक्षाशास्त्री के रूप में समाज के सम्मुख प्रस्तुत हुए। उन्होने आदर्श राष्ट्र के निर्माण में महत्वपर्ण योगदान देने के साथ ही विश्व को मानवतावादी विचारधारा का मार्ग भी दिखाया। इसी मार्ग का अवलम्बन कर मानव समाज सदैव के लिए दु.ख. दर्द, द्वन्द, द्वेष, दरिद्रता एवं दयनीयता स`मुक्ति पा सकता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों पर मार्क्स के दर्शन का प्रभाव

डॉ. अम्बडकर ने मो र्क्सवाद का गहरा अध्ययन किया था। उन्होंने अन्य भारतीय तथा पश्चिमी समाजवादियों के सिद्धांतों का भी अध्ययन किया था। यूरोपीय देशों में अपने प्रवास के दौरान उन्होनें पूंजीवद और उसके दमन चक्र को करीब से देखा था तो भारतीय समाज मे ंदलित वर्ग में पैदा होने के कारण जाति व्यवस्था के कटु अनुभव तो उनक`पास थे ही। व`किसी भी सिद्धांत, दर्शन और नियम को उन करोड़ों लोगो ंकी दृष्टि स`देखते थे, जो दलित, अछूत, शोषित और गरीब हैं इसलिए उनकी समाजवाद की अवधारणाएँ अन्य समाजवादी अवधारणाओं स`थोड़ी भिन्न हैं। उन्होंने एक जगह कहा है कि "यदि कार्ल मार्क्स भारत में पैदा होता और उसे अपना प्रसिद्ध ग्रंथ कैपिटल भारत मे ंबैठ कर लिखना पड़ता तो वह उसे दूसरे ढंग स`ही लिखता।" इसस`उनक`अध्ययन की गम्भीरता को समझा जा सकता है। डॉ. अम्बेडकर मानते हैं कि कम्युनिज्म सर्वहारा की मुक्ति का सिद्धांत है। यदि सर्वहारा समाज का वह वर्ग है, जो अपनी आजीविका के साधन पर्णतया तथा केवल अपने श्रम की बिक्री से हासिल करता है, किसी पूंजी से हासिल किए गए मुनाफे से नहीं, तो भारत मे ंदलित जातियाँ ही सर्वहारा वर्ग है लेकिन फ्रेडरिक एंगेल्स का यह मत भारत पर लागू नहीं हो सकता कि सर्वहारा उस औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप पैदा हुआ वर्ग है, जो गत शताब्दी के उत्तरार्ध में इंग्लैण्ड में हुई थी। यह मत इंग्लैण्ड, जर्मनी और फ्रांस आदि देशों के बारे में सच हो सकता है। परंतु भारत का सर्वहारा अर्थात् गरीब और श्रमजीवी वर्ग वर्ण व्यवस्था के गर्भ से पैदा हुआ है। भारत में जिस समय वर्ण व्यवस्था अस्तित्व में आयी, उसी समय सर्वहारा भी अस्तित्व में आया इसलिए भारत का सर्वहारा वर्ग किसी औद्योगिक क्राति का परिणाम नहीं है। वह एक ऐसा वर्ग है, जो जन्म से ही सर्वहारा है, जन्म से ही दलित है और जन्म से ही दास है। मार्क्सवाद की नई सामाजिक व्यवस्था उद्योगों में निजी स्वामित्व का पर्ण उन्मूलन चाहती है। उसमें उसके स्थान पर उत्पादन के औजारो ंका समाज उपयोग तथा तमाम वस्तुओ ंका वितरण सबकी सहमति से होगा अथवा तथाकथित वस्तुओ ंकी साझेदारी होगी।

वास्तव में डॉ. अम्बडेकर की राज्य समाजवाद की अवधारणा, खास तौर स`कृषि के क्षेत्र मे ंआज भी क्रांतिकारी है। भारत के अन्य समाजवादी विचारको ंमे ंकोई भी, यहां तक कि नेहरू और लोहिया भी कृषि क्षेत्र में ऐसा परिवर्तन नहीं चाहते थे। नेहरू ने केवल भूमि सुधारो ं की आवश्यकता पर जोर दिया था, जबकि लोहिया कृषि क्षेत्र मे ंकिसी परिवर्तन के पक्षधर नहीं थे। एम.एन. राय की पार्टी ने भी कृषि क्षेत्र में ऐसी किसी योजना पर विचार नहीं कियास था, जो आर्थिक परिवर्तन लाये। यह डॉ. अम्बडेकर ही थे, जिन्होंने कृषि का औद्योगीकरण किए जाने की मांग की थी।

डॉ. अम्बडेकर की समाजवादी अवधारणा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसके केंद्र मे ंसिर्फ मजदूर और गरीब वर्ग है। वहाँ सवर्ण और दलित तथा हिन्दू और मुलसमान का भेद नहीं है। व`धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण, जाति और लिंग के आधार पर मजदूर में कोई भेद नहीं करते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने ठीक लिखा है कि एक मजदूर नेता के रूप मे ंडॉ अम्बेडकर मे ंजाति के भेद पीछे छूट गए थे। वे सिर्फ वर्गों की बातें करते हैं और मजदूर वर्ग के हाथो ं मे ंदेश का नेतृत्व देखना चाहते हैं।

आज जब देश की अर्थव्यवस्था उच्च कुलीन तथा मध्यम वर्ग के हाथो ंमें है, जिन्होनें बर्बर शासको ंसे मिल कर देश को विशाल गरीब, दलित और मजदूर वर्गीय आबादी का जीना मुश्किल कर दिया है तब क्या मजदूर वर्ग के नेतृत्व का प्रश्न सिर्फ बौद्धिक विमर्श का विषय बना रहेगा? जनता के बीच इस सवाल को कौन लेकर जाएगा? क्या यह दायित्व दलित और वामपथी विचारकों का नहीं है कि वे एक साझा सहमति का कार्यक्रम बना कर इस सवाल को आगे बढ़ायें?

कार्ल मार्क्स के विचारो ंके सपूंर्ण विश्व मे ंफैले होने के बावजूद डॉ. अम्बडेकर मार्क्स से ज्यादा प्रभावित नहीं थे फिर भी उन्होनें समाजवादी शासन के विचार मार्क्स स`लिए व सर्वहारा वर्ग की भलाई के बजाय दलित वर्ग की स्थिति मे ंसुधार हेतु प्रयास किये।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों पर महात्मा बुद्ध के दर्शन का प्रभाव

महात्मा बुद्ध के विचारो ंका प्रभाव डॉ. अम्बडेकर के जीवन के हर पहलू पर दृष्टिगोचर होता है। डॉ. अम्बेडकर इस सबंध मे ंस्पष्ट करते हुए कहते हैं कि यह विश्व के लिए उपयोगी है। डॉ. अम्बडेकर के अनुसार उनके विचार मौलिक व बुद्धिवादी थे। डॉ. अम्बडेकर के सामाजिक और राजनीतिक दर्शन को बुद्ध विचारो ंसे प्रभावित मिली एवं उनक`लोकतत्रं के समर्थन के पीछे भी बुध के लोकतंत्र संबंधी विचार थे। डॉ. अम्बेडकर ने बुद्ध के आदेश के अनुरूप समाज जीवन खड़ा करने का प्रयास किया।

बौद्ध धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में एक है तथा एक अत्यंत महत्वपर्ूण धर्म है। इसका प्रादुर्भाव तथा विकास हिंदू समाज की शोषक, जटिल तथा अप्रिय होते जा रही धार्मिक कर्मकांडों एवं जाति व्यवस्था की प्रतिक्रिया के रूप में हुई थी। आज से 2500 वर्ष पूर्व नेपाल के कपिलवस्तु में सिद्धार्थ नाम से पैदा होने वाले मनुष्य और बुद्ध के नाम स`निर्वाण पाने वाले व्यक्ति ने ऐसे तथ्यों की खोज की 'जिसमें न परमात्मा है, न आत्मा है, न ही देवी और देवता है, न ही स्वर्ग और नर्क और न ही पुनर्जन्म का कर्म फल है और न वर्ण और जाति व्यवस्था ईश्वरीय है। उन्होनें ऐसे सिद्धांतों को प्रतिपादित किया जो मनुष्य के हैं, मनुष्य द्वारा है, मनुष्य के लिए हैं और जो देश और काल के अनुसार परिवर्तनीय है।' इसलिए हिंदू समाज से त्रसित शूद्र और गरीब व्यक्ति उनके अनुयायी बने। जनजातियों एवं अन्य धर्मों के लोगों ने भी उत्साहपर्वूक देश–विदेशो ंमें बौद्ध धर्म को स्वीकार किया।

बौद्ध धर्म से प्रभावित होने के कारण ही बाबा साहब धर्म के नाम पर अथवा उसकी आड़ मे ंआडंबर तथा ढोंग ढकोसले को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे। उनके मस्तिष्क में धर्म एक साथ साफ तस्वीर थी, इसक`अतिरिक्त उन्होनें कभी भी दकियानूसी विचार को स्थान नहीं दिया। उन्होंने नैतिक,

भौतिक तथा आध्यात्मिक धर्म को ही स्थान दिया था। वे धार्मिक अंधविश्वासों, पूजा–पाठ और पाखंड के विरोधी थे। व`धर्म को इस दृष्टि स`देखते थे कि उसस`जीवन को सुख की प्राप्ति हो सके। वह समाज मे ंइस ढ़ग स`योगदान करे ंकि एक न्यायसंगत व्यवस्था बन पाये। निःसंदेह हिंदू धर्म में अनेक लौकिक एवं परालौकिक विचारो ंका संगम मिलता है जिसे आसानी से समझना कठिन है। लेकिन डॉ. अम्बडेकर जैसे समीक्षक ने हिंदू धर्म का गहन अध्ययन मनन करके यह पाया कि इसमें बहुत स`ऐसे अवगुण हैं जो समानता, स्वतंत्रता, बधुंत्व, नैतिकता, न्याय जैस`आदर्शों का हनन करते हैं। डॉ. अम्बेडकर स्वयं हिंदू परिवार मे ं जन्मे, पर समाज में वर्ण, जाति, छुआछतू आदि के कारण उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाये, अपमान सहे और प्रकांड विद्वान होते हुए भी एक शूद्र–अछूत ही माने गये। इसलिए उन्होनें हिंदू धर्म के परित्याग का निर्णय किया। यह निर्णय हिंदू धर्म, समाज एवं सिद्धांतो ं की ठोस समीक्षा पर आधारित है।

साहित्य का पुनरावलोकन

[1] Saikia, J. (2021) के अध्ययन के अनुसार, अछतूों के भगीरथी डा. अम्बडेकर द्वारा जो प्रयास किए गये उनका उल्लेख जिन शब्दों में किया वे निम्नलिखित हैं– ''उन्होंने अपने वैयक्तिक अनुभव से देख लिया था, कि जिस वर्ग मे ंउनका जन्म हुआ उसके साथ कितने अत्याचार युगों से हो रहे ंहैं। सामाजिक ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक भीषण अत्याचार थे। लेकिन इस वैयक्तिक अनुभव को उन्होनें अपने निजी बन्धनो ंको ढीला करने के लिए नहीं इस्तेमाल किया। उन्होनें अपने भारतवर्ष के सबसे अधिक उत्पीडित वर्ग को सब तरह से उठाने का बीड़ा उठाया। इसमें तो सन्देह ही नहीं कि इस वर्ग के लिए बाबा साहब ने जितना कठिन परिश्रम किया, उतना किसी व्यक्ति ने आधुनिक युग में नहीं किया। सच तो यह है कि उन्हीं के भगीरथ प्रयत्न से पहाड़ जैस`बांध पर दरार हुई और आगे का रास्ता खुला'।

[1] Saikia, J. (2021). Religion and Social Change Among the Ethnic Communities of Assam. *International Journal of Interdisciplinary Research in Science, 3*, 2395-4345.

जाटव, डी. आर (2021): 'सोसल फिलोसफी ऑफ डॉ. अम्बडेकर'[1] में उल्लेख करते हैं कि, डॉ. अम्बडेकर के चिन्तन शैली के लक्षणों को निम्नवत उल्लेख किया है– (1) मानव मात्र के मध्य समानता, (2) प्रत्येक मनुष्य अपने आय में साध्य है, (3) प्रत्येक मानव में सामाजिक, आर्थिक एव ंराजनैतिक

[1] जाटव, डी. आर (2021): 'सोसल फिलोसफी ऑफ डॉ. अम्बडेकर' राधा कृष्ण प्रकाषनः नई दिल्ली, पृ 440।

तथा धर्म की स्वतंत्रता का स्वत्व है, (4) प्रत्येक मानव को अपनी चाहे ंपूर्ण करने और अभय होना चाहिए. (5) स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व और शोषण स ेमुक्ति (व्यक्ति की व्यक्ति से, वर्ग की वर्ग स ेतथा राष्ट्र की राष्ट्र से), (6) ससंदीय लोकतंत्र के नीचे जन तंत्रात्मक समाज को बनाये रखना चाहिए (7) समाज परिवर्त को यंत्र के रूप मे ंअहिंसा मे ंविश्वास करना चाहिए, (8) वर्ग संघर्ष की उपक्षेा शांति स्थापना के लिए प्रेरित करने वाली विधियों को ग्रहण करना चाहिए और सम्भव हो तो नागरिक युद्धों को भी. (9) अध्यात्मिक अनुशासन की, किसी भी अन्धविश्वास के सिद्धांत एवं वाद की उपेक्षा करना चाहिए तथा (10) सारभौमिक प्रमे, समानता, मानवीय बन्धुत्व जैसा की बुद्ध के विचार थे सशक्ति नींव रखना चाहिए।'

परिपूर्णानन्द वर्मा (2021)[2] 'देशभक्त डा. अम्बडेकर' में लिखते हुए उल्लेख करते हैं कि, ''भारत की सामाजिक धारा में दूषण, त्रुटि तथा दुर्बलता को दूर कर समस्त भारत, हिन्दू समाज तथा हर श्रेणी को एक पवित्र सत्रू में बांधकर उसकी बिगड़ती स्थिति को सुधारने के लिए डा. अम्बेडकर ने सबस ेदुर्बल अंग का सुधारने के लिए तथा राष्ट्र के मूलश्रोत मे ंप्रवाहित करने के लिए दलितोंद्धार का आन्दोलन उठाया। डा. अम्बेडकर ने अकेले उसी दलित समाज से मिलकर अपनी प्रतिमा, बुद्धि तथा ज्ञान का शस्त्र लेकर अहिंसक युद्ध प्रारम्भ कर अभूतपूर्व कार्य किया तथा दलित वर्ग का ही नहीं समूचे राष्ट्र के हित में था। राजनीति के क्षेत्र में 'अखण्ड भारत' का उद्घोष करने वाले महान नेताओ ंमे ंउनकी भी गणना है। यही नहीं वे स्वतंत्रता को भीख से नहीं प्राप्त करना चाहते थे। वे साफ कहते थे–''स्वतंत्रता भीख से नहीं मिलती इसके लिए सघंर्ष करना पड़ेगा''। हिन्दू समाज की कुरीतियों में केवल हुआछतू पर ही उनका ध्यान नहीं था। वे हिन्दू समाज के हर की कुरीतियों में केवल छुआछतू पर ही उनका ध्यान नहीं था। वे हिन्दू समाज के हर अंग मे ंव्याप्त बुराई को दूर करने का उपदेश देते रहते थे। अद्भुत प्रतिमा सम्पन्न इस महापुरूष का सबसे बड़ा कार्य स्वराज्य के लिए भारतीय संविधान की रचना है। इस महान कृति पर विधिशास्त्र विशारद लोग ही प्रकाश डाल सकते हैं।

एच. आर. जोधा (2021)[3] 'अभूतपूर्व क्रांतिकारी विचारक' शोध निबन्ध में ''डा. अम्बडेकर के आर्थिक विचारो ंपर प्रकाश डालत ेहुए लिखते हैं– ''बम्बई विधान परिषद में उन्होंन ेमजदूरो ं के अधिकारो ंके लिए बड़ा सघंर्ष किया। उन्होनें मजदूरो ंके हड़ताल करने के अधिकार की वकालत की। बैगार उन्होनें बम्बई विधान परिषद मे ंप्रस्ताव पेश किया। डॉ. अम्बडेकर के सामने केवल कारखानों के ही मजदूर नहीं थे अपितु खेतिहार मजदूरो ंकी भलाई के लिए भी आवश्यक थी।

---

[2] परिपूर्णानन्द वर्मा (2021) 'देशभक्त डा. अम्बडेकर' आंबेडकर प्रतिष्ठान, कल्याण मंत्रालय, भारत सरकारः नई दिल्ली, पृ. 341।

[3] एच. आर. जोधा (2021) 'अभूतपूर्व क्रांतिकारी विचारक' शोध निबन्ध Manohar Publication: Delhi, p 12

निर्मल राज (2015)[4] ने 'डॉ बी आर अम्बडेकर के सामाजिक दर्शन' के अध्ययन मे ं तर्क दिया कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों और विकास के सबंध मे ं अम्बडेकर की टिप्पणियाँ सच हो रही हैं। भारत के महान सपूत के विचारो ंको संरक्षित करने की अत्यंत आवश्यकता है जो वर्तमान समय में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। अम्बडेकर का दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक असमानता, राजनीतिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र को खतरे में डाल देगी। वे भारत मे ं स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की स्थापना के आधार के रूप मे ं मामले को खत्म करने के पक्ष मे ं थे। अम्बडेकर ने भारत मे ं सामाजिक दर्शन को एक नया आयाम प्रदान किया। उन्होंने दृढ़ता से वकालत की कि अस्पृश्यता एक धार्मिक व्यवस्था नहीं है बल्कि एक आर्थिक व्यवस्था है जो गुलामी से भी बदतर है। महिलाओं के उत्पीड़न के प्रति उनका एक विशिष्ट दृष्टिकोण था।

शोध के उद्देश्य –

1. धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना इस प्रकार है –

H1: धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव देखा गया है।

शोध प्रविधि–

वर्तमान शोध के अंतर्गत दो प्रकार के समंक संकलन का चयन किया गया है– प्राथमिक एव ं द्वितीयक प्राथमिक समंक सकंलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची जो कि शोधार्थी द्वारा तैयार की गई जिसका आधार विगत् शोध पत्रों की सहायता से तैयार की गयी है जिसमे ं प्रष्नों के मापन का आधार लिकर्ट स्केल था। इसक ं अंतर्गत व ं प्रष्न जो कि सामाजिक परिवर्तनों को प्रदर्शित करते हैं, सम्मिलित किए गए। द्वितीयक समंक सकंलन के लिए विभिन्न शोध पत्रों, पत्रिकाएँ, पुस्तक, वेबसाइट्स, इंटरनेट, रिपोर्ट, प्रलेख, इत्यादि का चयन किया गया। डॉ अम्बडेकर सामाजिक शोध संस्थान महू के गंथालय का उपयोग किया गया।

शोध इकाई– प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक समंक के लिए महू व इंदौर जिले का चयन किया गया क्योंकि महू डॉ. बाबा साहेब की जन्म स्थली होने के कारण उनके विचारों का प्रभाव इन जिलो ं मे ं सर्वाधिक देखा गया।

[4] निर्मल राज (2015) "Elevation of the Depressed Classes", The Indian Review, Vol. XI. September pp. 676—79

शोध विधि– उत्तरदाताओं का चयन **स्नोवॉल विधि प्रतिचयन** पर आधारित है।

शोध सेम्पल– कुल 400 उत्तरदाताओं का चयन किया गया था।

शोध संरचना– प्रस्तुत शोध की संरचना descriptive पर आधारित थी जिनके अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची पर आधारित प्रष्नों की लोडिंग के तहत् कारकों को निर्मित किया गया।

विश्लेषण विधि– SPSS 20 के वर्जन पर प्रतिगमन तथा सहसंबंध का प्रयोग किया गया ताकि कारकों मे आपसी संबधं को स्पष्ट किया जा सके तथा उसका प्रभावोत्पादकता का अध्ययन हो सकें।

शोध परिकल्पना का मूल्यांकन

प्रस्तुत शोध प्रबंध पर कार्य करने के पूर्व शोधकर्ता द्वारा कुछ परिकल्पनाएँ ली गई थीं। शोध उपरांत यह जानना भी आवष्यक है कि वे परिकल्पनाएँ कितनी सत्य एवं कितनी असत्य सिद्ध हुई हैं। शोध परिकल्पना का परीक्षण निम्नानुसार हैं।

H1: धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव देखा गया है।

तालिका कमांक – 1

Model Summary[b]

धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव

सामाजिक परिवर्तन
सामाजिक प्रगति

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate	Change Statistics				
					R Square Change	F Change	df1	df2	Sig. F Change
1	.428[a]	.184	.182	.76110	.184	89.497	1	398	.000

a. Predictors: (Constant),
b. Dependent Variable:

दोनों कारकों सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव व धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक प्रगति के मध्य पियर्सन सहसंबंध परीक्षण करने पर 0.428 मान प्राप्त हुआ है, तथा सार्थकता मूल्य (p-value) का मान 0.000 जो स्तरीय मान 0.05 स`कम है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारको ंके मध्य पियर्सन मान व सार्थकता मूल्य (p-value) स्तर मान 0.05 से कम होने पर कारको ंके मध्य सार्थक संबधं है। साथ ही मॉडल समरी में प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग दोनो ंकारकों के मध्य सकारात्मक सबंध को ज्ञात करने हेतु किया गया है। मॉडल समरी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, लिनियर सहसंबंध गुणांक R का मान 0.428 है, व आर. स्क्वयेर (0.184) है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य सबधं है। आर. स्क्वयेर (गुणांक का निर्धारण) का मान 0.184 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव के मापदण्ड पर 18.4% है। सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव व धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक प्रगति मे ंवृद्धि के बीच संबधं को जानने के लिए 'अनोवा परीक्षण' का प्रयोग किया गया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता
है कि F का मान 89.497 है, जो सारणीमान 2.47 से अधिक है व सार्थकता मूल्य .000[a] है, जो स्तरीय मान 0.05 से कम है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि परिकल्पना **H_1:** धर्मांतरण के बाद दलित वर्ग में सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव देखा गया है।

अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होतो है।

निष्कर्ष व सुझाव –

डॉ. अम्बडेकर समानता को लेकर काफी प्रतिबद्ध थे। उनका मानना था कि समानता का अधिकार धर्म और जाति स`ऊपर होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना किसी भी समाज की प्रथम और अंतिम नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। अगर समाज इस दायित्व का निर्वहन नहीं कर सके तो उसे बदल देना चाहिए। वे मानते थे कि समाज में यह बदलाव सहज नहीं होता है, इसके लिए कई पद्धतियों को अपनाना पड़ता है। आज जब विश्व एक तरफ आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है तो वहीं दूसरी तरफ विश्व मे ंअसमानता की घटनाएँ भी देखने को मिल रही हैं।

अम्बडेकर का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिए समर्पित था। उन्होनें प्राचीन भारतीय ग्रन्थो ंका विशद अध्ययन कर यह बताने की चेष्टा भी की कि भारतीय समाज मे ंवर्ण–व्यवस्था, जाति–प्रथा तथा अस्पृश्यता का प्रचलन समाज मे ंकालान्तर मे ंआई विकृ तियो ंके कारण उत्पन्न हुई है, न कि यह यहाँ के समाज मे ंप्रारम्भ से ही विद्यमान थी।

सामाजिक क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए प्रयास किसी भी दृष्टिकोण से आधुनिक भारत के निर्माण में भुलाये नहीं जा सकते जिसकी प्रासंगिकता आज तक जीवतं है। सामाजिक क्षेत्र मे ंउनके विचारो ंकी प्रासंगिकता को निम्न बिन्दुओ ंके अंतर्गत देखा जा सकता है–

- अम्बडेकर ने वर्ण व्यवस्था को अवैज्ञानिक, अत्याचारपूर्ण, सकीर्ण तथा गरिमाहीन बताते हुए इसकी कटु आलोचना की थी।

- अम्बडेकर का मत था कि समूह तथा कमजोर वर्गों मे ंजितना उग्र संघर्ष भारत मे ंहै, वैसा विश्व के किसी अन्य देशों में नहीं है।
- इस व्यवस्था में कार्यकुशलता की हानि होती है, क्योकि जातीय आधार पर व्यत्तिफयों के कार्यों का पर्वू में ही निर्धारण हो जाता है।

जाति व्यवस्था की जटिलता और अराजक सामाजिक जीवन ने बौद्ध धर्म के उदय में भूमिका निभाई। समय के साथ वैदिक काल में मौजूद रंग प्रणाली एक जटिल स्थिति स ेवंशानुगत प्रणाली मे ंबदल गई। बौद्ध धर्म के आगमन स ेपहले वर्तमान सामाजिक व्यवस्था कर्म के आधार पर नहीं बल्कि जन्म पर आधारित जाति में विश्वास करने लगी थी। जातिगत भेदभाव की मानवीय धारणा तेज हो गई है और उद्योग वंशानुगत हो गया है।

डॉ. बी. आर. अम्बडेकर ने कहा है, "मजदूर वर्गों के हर व्यक्ति को रूसों का 'सामाजिक अनुबंध', मार्क्स का 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' पोप लियो तेरहवें का 'मजदूरो ंकी स्थिति पर जारी परिपत्र' एवं जान स्टुअर्ट मिल के स्वतंत्रता पर विचारों की जानकारी रखनी जरूरी है, क्योकि ये चारों आधुनिक समय के समाज और सरकारी सगंठन के कार्यक्रम सम्बंधी मूल दस्तावजे हैं।" उन्होनें आगे कहा "मजदूर वर्गों ने इन पर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना कि उन्हे ंदेना चाहिए था"।

आधुनिक भारत के चिंतक डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने साम्यवाद के प्रति अपना दृ ष्टिकोण अपने निबंध 'बुद्ध या कार्ल मार्क्स' में स्पष्ट किया है। डॉ. आंबेडकर कार्ल मार्क्स को आधुनिक समाजवाद या साम्यवाद का जनक मानते थे। मार्क्स का मूल उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि उनका साम्यवाद का सिद्धांत मात्र एक कपोल–कल्पना नहीं बल्कि वैज्ञानिक कसौटी पर सच्चा साबित होने वाला एक यथार्थवादी व्यावहारिक सिद्धांत है।

REFERENCES

BOOKS

1. Ambedkar, B.R., Annihilation of Caste, with a reply to Mahatma Gandhi (Bombay,
2. 1937).
3. Ambedkar, B.R; Buddha or Karl Marx, Anand Sahitya Sadan, Aligarh, 1989.
4. Ambedkar, B.R., Communal deadlock and a way to solve it, (Bombay, 1945).
5. Ambedkar, B.R, Evolution of Provincial Finance in British India, P.S. King and Sons
6. Ltd., London , 1925.
7. Ambedkar, B.R., Mr. Gandhi and the Emancipation of the Untouchables, (Bombay,
8. 1943).

9. Ambedkar, B.R., Gandhi and Gandhism; Bhim Patrika Publications; Jalandhar; 1970.
10. Ambedkar, B.R., Pakistan or Partition of India, (Bombay, 1945).
11. Ambedkar, B.R., Ranade, Gandhi and Jinnah (Bombay, 1943).

JOURNALS

1. Nagolkar, V.S., "Removal of Untouchability: Goals and Attainments", Indian Journal of Social Work, Vol.30., 1969, pp.189—201.
2. Parui, S.S., "Untouchability in the Early Indian Society", Journal of Indian History,
3. Vol.39, 1961, pp.1—11.
4. Rai, Lalpat, "The Depressed Classes", The Indian Review, Vol. XI, May 1910, pp.334-
5. 37.
6. Ranganathan, N., "The Depressed Classes", The Indian Review, Vol.XII, Oct.--Nov.,
7. 1911, pp. 892—95.
8. Sahai, B.K., "Depressed Clases", The Indian Review, Vol.XII, May, 1911, pp.344.
9. Sharrock, J.A., "Caste as a Factor in Indian Reforms", Asiatic Review, Vol. XV, 1919, pp. 402—24.